मकतूब
ਮਕਤੂਬ

Sukh Ameen

www.PunjabiLibrary.com

ਮਕਤੂਬ

मक्तूब

By

ਸੁੱਖ ਅਮੀਨ

@Author

PREET SINGH BHAINI
PUBLICATION

तू ना जाने तेरी याद में हम

क्या क्या झेला करते हैं

ख़ामोश चांदनी रातों में

संग चांद के खेला करते हैं!

सुख अमीन...

जुस्तुज़ू

हम ना'वाकिफ मुहब्बत में नफा ढूंढते रहे
लिखने को जान-ए-अदा ख़ाली सफा ढूंढते रहे

हुस्न फरोश अहद में, बेपर्दा कर खुद अक्स को
कुफ़्ल से बंधी दीवारों में ख़ालिस वफ़ा ढूंढते रहे

उलझी इबारत कहानी के समेट कर चन्द पन्नो को
कोई दिल बहलाने वाला हर्फ-ए-जफ़ा ढूंढते रहे

सोज-ए-निहां चिंगारी से जला कर शमा अज़ाब की
हम खुद को खुद में आईने से हो खफा ढूंढते रहे

दफ्न हुए ख्वाबों की उड़ान से वाफिक राहजन को
दिलबर दहलीज़ से पुरसिश कर कई दफा ढूंढते रहे

हम पागल थे मुहब्बत में नफा ढूंढते रहे
कुफ़्ल से बंधी दीवारों में ख़ालिस वफ़ा ढूंढते रहे

खुदा चाहिए

जहाँ जिन्दगी से खुशी खफा न हो
जहाँ ज़ख्म से दर्द रता ना हो
जहाँ रिश्तों में नुक्सान नफा ना हो
जहाँ किसी ने धोखा चखा ना हो
ऐसा आश्ना, इश्क, जहां चाहिए

बंदगी में होंगे लीन हम उसकी
दैर-ओ-हरम नहीं, खुदा चाहिए

गुज़ारिश है

नहीं रोकेंगे तुझे
तेरी मर्ज़ी के बगैर
तू बेझिजक सामने से
गुज़र जाया कर

जलन बहुत होती है
तेरे उस दिल-नवाज़ से
गुज़ारिश है मेरी गली में
अकेले आया कर

<u>अंजाम-ए-उल्फ़त</u>

कभी फुरसत मिले तो मकतूब मेरे पढ़ना
एक एक शब्द में जड़े हुए आलाम मिलेंगे
शब-ए-फुर्कत में मिली थी जो रूसवाईयां तुझसे
वही तहूमतें, तमाशे शरिआम मिलेंगे

रस्म-ए-आशिकी में छोड़े हैं जो हाशिए हमने
उन लमहों को समेटे हुए पैगाम मिलेंगे
दिल-ए-शिकस्ता के हर टुकडे पे तेरा नाम
खुद की ही लगा बोली हुए नीलाम मिलेंगे

दर-ए-तुर्बत तक साथ ना छोड़ेंगी तनहाईयां
यूँ शिद्दत से किए हुए कत्ल-ए-आम मिलेंगे
सर-ए-महफिल से मिले कभी फुरसत तो देखना
हम जाते हुए खराबत सुबह-ओ-शाम मिलेंगे

शिकवा-ए-बेवफाई ये आस रख कर छोड़ दिया

कि कभी तो किसी मोड पे खुलेआम मिलेंगे

शहर-ए-वफा की कभी सुनना तू कहानियां

सब कुछ लुटाने वाले ही बदनाम मिलेंगे!

कभी–कबार

ज़िक्र नहीं हुआ बेशक, तेरे चेहरे से दिख जाते थे

ख्याल तुझे उसके कभी–कबार और क्यों आते थे

ज़लील होता था मेरा हर एक लफ्ज़ ब्यान ए इश्क़ में

हर वस्ल हम औकात में छोटे रह जाते थे!

सर-ए-बाज़ार

कभी गज़लें लिखा करते थे जो मेरी जुल्फ की तारीफ़ में
आज कल वो किसी हुस्न को आब-ज़ार लिखते हैं

छुपते हैं आते जाते शब, आवाम की पौशाक में
हम गुनहगार हैं फिर भी सर-ए-बाज़ार दिखते हैं

पहन लिया हो जैसे कोई सन्नाटा गली मोहल्लों ने
अब शोर ओ शराबा सुनने को ये कान तरसते हैं

दीदार-ए-आश्ना है किसी तबर्रुक से कम नहीं
खैरात में उसे जो मांगू तो फरिश्ते भी हस्ते हैं

गुलिस्ताँ में टूटा ख़ार हैं कि कुचल दिए जाते हैं
वो झूठों की बस्ती में अपनी शान समझते हैं

तूँ अपनी शक्ल संवार मेरी तो हालत ही ऐसी है

कौन क्या कैसे खुद को बे'नाम समझते हैं

आँखों आँखों से

आँखों आँखों से की जाएँ

वो महज़ बातें नहीं होती

किसी की याद में जो जागें

हां वो रातें नहीं होती!

अब हम पहले से ना रहे तो क्या

"तुझपे फ़िदा तो हैं

खल्कत–ए–इश्क में मेरी जां

कभी करा'मातें नहीं होती!

जुनूँ-ए-जानाँ

पढ़ते नहीं हैं हाथ में किताब लिए बैठे हैं
जुनूँ-ए-जानाँ आशिकी का खिताब लिए बैठे हैं,

उनके पाँव क्यूँ नहीं मचल रहे वस्ल के लिए
हम हैं कि एक झलक को शिताब किए बैठे हैं!

जब सुना कि शौकीन हैं वो जाम ओ शबाब लेने के
क्या कहें बस हाथों में स़ागर ए आब लिए बैठे हैं

इतने दीवाने हो चुके हैं अब तालीम क्या करे
आफ़ताब को जो नज़्म ओ महताब किए बैठे हैं

बनने को उनकी अहलिया उतावले से हो रहे
कि अब से ही हम जामे सुर्ख शहाब सिए बैठे हैं

आग़ाज़-ए-दास्ताँ कहें तो हम खुदी से बे'ख़बर
उड़ने का अब चर्ख़ पे ख़्वाब लिए बैठे हैं!!

सुबह-ओ-शाम

देखा उसे जो पहली दफा,
दिल सुध-बुध, होश से जिया नहीं!

सुबह-ओ-शाम बस वही नाम,
और नाम कोई हमने लिया नहीं!

ऐसा नशा है उन निगाहों में,
कोई जाम अभी तक पिया नहीं!

हम सहबा चख आए इश्क की,
यूँ तो जुल्म कोई किया नहीं!!

खुश नहीं हूँ मैं

मत पूछा करो किस मिजाज़ मैं हूँ
ठीक तो हूँ मगर खुश नहीं हूँ मैं

अफ़सोस की बात है सब पास है मगर
अफ़सोस की ही तो बात है खुश नहीं हूँ मैं

एक ही वजह है जो रौशन करे हर पल मेरा
वो एक ही तो वजह है कि खुश नहीं हूँ मैं

बेवजह आ जाती है मुस्कान जिनकी बातों से
उनकी ही तो बातें हैं कि खुश नहीं हूँ मैं

बेशक हर एक माहौल में आज़ाद हूँ
एक हादसा दफ़न है तो खुश नहीं हूँ मैं

जीना है और ख्वाइश ए मौत में भी हूँ
ये दो राह इस लिए कि खुश नहीं हूँ मैं

मत दिखाना पसन्द मुझे हमदर्दी अब नहीं
खुश होते हो देख कर कि खुश नहीं हूँ मैं

कोई बड़ी बात नहीं हैं ये दुख, गम, तन्हाईयाँ
हां! छोटी सी ही बात है कि खुश नहीं हूँ मैं!

चेहरे

पत्ते मेरी शाख के हिजाबी ना थे,
थे हवाओं में गुम पर शराबी ना थे।

चेहरे तो हजारों देखे इन आंखों ने,
मगर चेहरे वो तुझसे किताबी ना थे।

हरीफ़-ए-हयात

किसी रकीब से तकाज़-ए-हुरमत न रखना
जख़्म देने वाले मुदावा बताया नहीं करते

तख़सीस कर लेना राह-ए -उल्फ़त कभी जाओ तो
सर - ए- महफ़िल महबूब को नचाया नहीं करते

जिन्होंने मेहनत से खड़ी की हों मिनारें
वो किसी मुफ़लिस की छत्त गिराया नहीं करते

सिक्का - सिक्का कर भरी हों जिसने तिजोरियां
वो यूँ पैसों को हवा में उड़ाया नहीं करते

यूँ तो जुल्म की हदें बे-हिसाब हैं लेकिन
सफ़ीने रक्त के समंदर में बहाया नहीं करते

संभल जाना आफ़ात की घड़ी याद आए तो
कभी मुर्दा दिल रूठे को मनाया नहीं करते

तुहम्त न लगा तू मेरी बेबसी पे ऐ ज़ालिम
खुद रूले हुए किसी खुशदिल को रूलाया नहीं करते

तेरे झूठ को जो मजलिस में समेटे बैठा हो
ऐसे रफ़ीक को शिकंजे में फंसाया नहीं करते!

इश्क़ के अफ़साने

दगाबाजों की गिनती में आने लगे हैं
यारो! हम भी बेवफ़ा कहलाने लगे हैं,

जहां सोचा ना था उस मंज़र पे आ खड़े
मेरे इश्क़ के अफ़साने भी चिल्लाने लगे हैं।

ज़िक्र तेरा

सुन ज़िक्र तेरा गुल यादों के
हो अश्क से वाकिफ़ खिलते हैं,

यूँ ही नहीं हम ख़लक़ छोड़
तुझे रोज़ फ़लक पे मिलते हैं!

मुकम्मल इश्क़

हम इश्क़ जहां से मीलों दूर
हसरतों को बांधे रखते हैं,

तू मुकाबिल है तो ए आशिक़
तुझे मुकम्मल इश्क़ मुबारक हो।

वो क्या था?

वो क्या था,
कि गुलाबों का मजाक उड़ाया जा रहा था
रफ़्ता रफ़्ता कर मिट्टी में मिलाया जा रहा था,

सवालों से घिरे हैं ये औराक़-ए-परेशाँ
कि क्यों सर-ए-दश्त हमें घुमाया जा रहा था!!

लिख नहीं सकते

यूं तो हम उन्हें हर दफा लिख सकते हैं
पर लिख नहीं सकते उन्हें कितना करते हैं याद

लिख रहे हैं उस वक्त जब हम तन्हा हुए हैं
मुहब्बत लिखी ही क्यों जाती है दिल टूटने के बाद।

नाव-ए-इश्क़

बे'इंतिहा आगोश में बहने को गुस्ताखियां
खुद को हिज़्र-ए-नफ़्स में जलाने चले हैं

मेरी इल्तिज़ा मुसाफिर सुन इतलाह उन्हें करना
हम नाव-ए-इश्क़ को समंदर बनाने चले है।

ख्याल

हम पर इल्ज़ाम है बेवक्त बेवफ़ाई का
और हमें ही मालूम नहीं " इलाज़ तन्हाई का,,

लगाकर गले अज़ाब को ज़मीं पर ही सो गए
आया ही ना हमें जब "ख्याल चारपाई का।

देखो वो पागल

फिर जाने लगे हैं उन्हीं गलियों में
जहाँ से लौटे हमें जमाना हो गया

सजाते थे चौखट जिन कदमों के लिए
पता चला उनकी चाल से कि बेगाना हो गया

वो जो कहते थे साथ रहेंगे सदा
सब कसमें और वायदे अफ़साना हो गया

होश न रहती थी कभी खुद की भी जिसे
आज देखो वो पागल सयाना हो गया।

आखरी ख़िताब

सुर्ख नशीली आँखों में दफ़न गहरा एक राज था
बिखर कर गिरा जमीं पर बहका हुआ ख्वाब था

हम घूमे गली, मुहल्ले सब सुख अक्स की तलाश में
जब्र-ए-मुसलसल मिला हमें गम आखरी ख़िताब था

मालूम ना था

एक आदत ने किया अदा ए इश्क़ को नाकाम
उस शक्श ने क्या बोला हमें मालूम ना था

ब्यान ना कर पाए उन्हें हाल ए दिल का फ़साना
हम तलाश में थे किसकी हमें मालूम ना था

क्यूँ......?

क्यूँ चुप सी हैं ये बदलियाँ
क्यूँ हवाएँ बे-आवाज़ हैं

क्यूँ बे-रंग सी हैं तितलियाँ
क्यूँ महक से गुल नाराज़ हैं

क्यूँ तू भी ज़रा सा गुम'सुध है
क्यूँ हुए गहरे मेरे भी राज़ हैं

क्यूँ मसर्रत फ़िदा है चहरे पे
क्यूँ ये होंठ मेरे हम'साज़ हैं

क्यूँ आज कल, दिन रात जवां
खिले रहते शाद आगाज़ हैं

क्यूँ टकरा के तेरी नज़रों से
हुई नज़रें मखमूर मोहताज हैं।

ज़हर

सब बीते हुए लम्हों को मिटाया जा रहा था
कुछ यूं हमें दावत में धोखा खिलाया जा रहा था,

छोड़ के अफसानों को बेहोशी में मख़मूर हुए
गिर पड़े जब ज़हर हमें पिलाया जा रहा था।

ਹਯਾਤ

ਚੁੱਪ ਚਪੀਤੇ ਕੋਲੋਂ ਲੰਘ ਗਈ
ਸੁਣਕੇ ਮੇਰੀ ਬਾਤ ਨਹੀਂ ਲੰਘੀ

ਰਾਗ ਗ਼ਮਾਂ ਦਾ ਛੇੜ ਗਵਾਚੀ
ਐਵੀਂ ਕਰਕੇ ਜ਼ਾਤ ਨਹੀਂ ਲੰਘੀ

ਨਿੱਤ ਨਵਾਂ ਦੁੱਖ ਦੇ ਜਾਂਦੀ ਏ
ਸੌਖੀ ਇਹ ਹਯਾਤ ਨਹੀਂ ਲੰਘੀ

ਆਸ ਵੀ ਆਸ ਹੀ ਬਣਕੇ ਰਹਿ ਗਈ
ਕਰਕੇ ਕੋਈ ਕਰਾਮਾਤ ਨਹੀਂ ਲੰਘੀ

ਕਹਿੰਦੇ ਤਾਂ ਨੇ ਇੱਕ ਹੋ ਗਏ ਆਂ
ਗੱਲਾਂ ਵਿਚੋਂ ਜਾਤ ਨਹੀਂ ਲੰਘੀ

ਬੇਸ਼ੱਕ ਰੋਜ਼ ਕਮਾਉਂਦੇ ਹਾਂ ਪਰ
ਪੈਸੇ ਵਾਲੀ ਮਾਤ ਨਹੀਂ ਲੰਘੀ

ਭੁੱਲ ਹੀ ਗਏ ਉਹ ਬੀਤੀ ਦੁਨੀਆ
ਯਾਦ ਮੇਰੀ ਖਿਆਲਾਤ ਨਹੀਂ ਲੰਘੀ

ਅੱਧੀ ਓਹਦੇ ਹਿਜ਼ਰ 'ਚ ਗੁਜ਼ਰੀ
ਅੱਧੀ ਰਹਿ ਗਈ ਰਾਤ ਨਹੀਂ ਲੰਘੀ

ਦੀਦ

ਮੁੱਖ ਤੇਰਾ ਨੂਰ-ਏ-ਸ਼ਮਸ ਜਿਹਾ
ਤੇ ਤੈਨੂੰ ਦੇਖ ਹੋਵੇ ਮੇਰੀ ਈਦ ਵੇ,
ਮੇਰਾ ਰਾਹ ਇਕ ਮੁਰਸ਼ਦ ਵੱਲ ਹੋਵੇ
ਤੇ ਦੂਜਾ ਵੱਲ ਹੋਵੇ ਤੇਰੀ ਦੀਦ ਵੇ!

ਨਾ ਮੈਂ ਦੱਸਣਾ

ਨਾ ਮੈਂ ਦੱਸਣਾ ਦਿਲ ਤੇ ਕੀ ਬੀਤੀ,
ਨਾ ਹੀ ਅੱਖ ਮੇਰੀ ਉਦੋਂ ਨਮ ਹੋਊ!

ਤੂੰ ਸਮਝ ਲਵੀਂ ਮੇਰੀ ਚੁੱਪ ਵਿੱਚੋਂ
ਕਿੰਝ ਚੀਖ਼ ਦਾ ਨਿਕਲਿਆ ਦਮ ਹੋਊ!

ਨਾ ਮੈਂ ਲਿਖਣਾ ਗੀਤ ਕੋਈ ਦਰਦ ਜਿਹਾ
ਨਾ ਕਿਤੇ ਜ਼ਿਕਰ ਤੇਰਾ ਹਮਦਮ ਹੋਊ!

ਤੂੰ ਬਦਲਿਆ ਸੀ ਕਿਰਦਾਰ ਜਿਵੇਂ
ਮੇਰਾ ਬਦਲਣਾ ਵੀ ਇੱਕ-ਦਮ ਹੋ!

ਨਾ ਮੈਂ ਰੱਖਣੀ ਚੀਜ਼ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਕੋਈ
ਨਾ ਮੇਰੀ ਝਾਂਜਰ ਦੀ ਝਮ ਝਮ ਹੋਊ!

ਫਿਰ ਇਸ਼ਕ ਕਰਨ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ

ਓਹਦੇ ਸੁਰਖ਼ ਸ਼ਬਾਬੀ ਨੈਣਾਂ ਵਿੱਚ ਦੇਖ ਨੂਰ ਮਰਨ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ
ਛੱਡ ਖ਼ਲਕਤ ਦੁਨੀਆਂ ਕੁੱਲ ਜਹਾਂ ਮੇਰਾ ਇਸ਼ਕ ਕਰਨ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ

ਨਿੱਤ ਸਹਰ ਸ਼ਾਮ ਖੜ੍ਹ ਦਰ ਓਹਲੇ ਮਾਹੀ ਝਾਕ ਮਾਨਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ
ਮੇਰਾ ਖੁਦ 'ਚੋਂ ਖ਼ੁਦੀ ਭੁਲਾ ਸੱਜਣਾ ਤੇਰੀ ਹਾਕ ਮਾਨਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ

ਪਾਵਣ ਲਈ ਛੋਹ ਮੁਸਕਾਨ ਜੁਬਾਂ ਹੱਦ ਲੀਹਾਂ ਟੱਪਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ
ਨੈਣਾਂ ਦੀਆਂ ਗੁੱਝੀਆਂ ਰਮਜ਼ਾਂ ਸੰਗ ਇੱਕ ਜੁਨ ਨੱਪਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ

ਜਾਪੇ ਰੋਮ ਰੋਮ ਮਖ਼ਮੂਰ ਸਨਮ ' ਰੂਹ ਲਮਸ ਪਾਵਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ
ਮੁੱਦੇ ਨਿਬੜਨ ਜਿੱਥੇ ਖ਼ਫ਼ੀ ਮੁੱਦਤਾਂ ਦੇ ਉਸ ਬੰਨੇ ਜਾਵਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ

ਗਮੀਂ ਡੁੱਬੇ ਕਲਬ ਦੀ ਲਾਟ ਵਿੱਚੋਂ ਮੇਰਾ ਸ਼ਮਾ ਜਲਾਉਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ

ਜੋ ਕਬਰਾਂ ਤੀਕ ਨਾਂ ਕੱਚ ਹੋਵਣ ਐਸੀ ਵੰਗਾਂ ਪਵਾਉਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ

ਜਾ ਮੁਕਰੱਬ ਗਲੀ ਉਸ਼ਾਕਾਂ ਦੀ ਮੁੜ ਨਫ਼ਸ ਰੰਗਾਉਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ
ਜੋਗੀ ਇਖ਼ਲਾਸ ਨਾਲ ਮੱਥਾ ਲਾ ਮੇਰਾ ਜੋਗ ਹੰਢਾਉਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ

ਪੀੜਾਂ ਨਾਲ ਭਰੀ ਕਿਆਰੀ ਵਿੱਚ ਡੁੱਲ੍ਹ ਰਕਤ ਹੋਵਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ
ਜਦ ਨਿਕਲੇ ਜਿੰਦ ਫ਼ਨਾ ਖ਼ਾਕ ਹੋਏ ਮੋਢੇ ਲੱਗ ਰੋਵਣ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ

ਕਰ ਯਾਦ ਵਿਛੋੜਾ ਦੁੱਖ ਬਿਰਹਾ ਇੱਕ ਵਾਰ ਮਰਨ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ
ਤੇਰੀ ਪਾਕ ਮੁਹੱਬਤ ਤਪਸ਼ ਲਈ ਮੇਰਾ ਇਸ਼ਕ ਕਰਨ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ
ਫਿਰ ਇਸ਼ਕ ਕਰਨ ਨੂੰ ਜੀਅ ਕਰਦਾ!

ਸਾਂਭੀ ਬੈਠੇ ਆਂ

ਸ਼ਕਲੋਂ ਗੰਭੀਰ ਕਿਸੇ ਸ਼ਾਇਰ ਦੇ ਕਲਾਮ ਜਿਹੇ
ਅੱਖੀਆਂ ਚ ਸੁਪਨੇ ਤਮਾਮ ਸਾਂਭੀ ਬੈਠੇ ਆਂ

ਸਿਖ਼ਰਾਂ ਤੇ ਪਹੁੰਚ ਕੇ ਜੋ ਇਕਦਮ ਚੂਰ ਹੋਇਆ
ਟੁੱਟੇ ਹੋਏ ਖ਼ੁਆਬ ਦੇ ਨਿਸ਼ਾਨ ਸਾਂਭੀ ਬੈਠੇ ਆਂ

ਗੁੱਝੀ ਜਿਉਂ ਪਹੇਲੀ ਦਾ ਜਵਾਬ ਨਾ ਪਛਾਣੇ ਕੋਈ
ਇਉਂ ਵਕਤਾਂ ਦੇ ਦਿੱਤੇ ਕਈ ਸਵਾਲ ਸਾਂਭੀ ਬੈਠੇ ਆਂ

ਪਹਿਲੀ ਹੀ ਨਜ਼ਰ ਵਿੱਚ ਸੋਚੀਂ ਤੈਨੂੰ ਪਾ ਦਿਊ
ਆਖੇਂਗਾ ਕਿ ਹਸਤੀ ਕਮਾਲ ਸਾਂਭੀ ਬੈਠੇ ਆਂ

ਝੱਲਿਆਂ ਦੇ ਵਾਨ ਕਦੇ ਝੱਲ੍ਹ ਅਸੀਂ ਕੀਤਾ ਨਹੀਂ
ਰੂਹ ਦੀ ਆਵਾਰਗੀ ਬੇਚੈਨ ਸਾਂਭੀ ਬੈਠੇ ਆਂ

ਸੱਚ ਹੈ ਤਾਂਹੀਂ ਤਾਂ ਇੰਝ ਸ਼ਰੇਆਮ ਆਖ ਰਹੀ
ਦਿਲ ਦੀ ਵੀਰਾਨੀ ਵਿੱਚ ਯਾਰ ਸਾਂਭੀ ਬੈਠੇ ਆਂ!

ਨਿੱਤ ਲੰਘਦੈਂ

ਕੁੱਝ ਬੋਲ ਜ਼ੁਬਾਨੋਂ ਖ਼ਫ਼ਾ ਹੋਏ
ਲਿਖ ਹਰਫ਼ ਬੀਜ ਚੁੱਪ ਬੋਇਆ ਏ
ਉਂਝ ਕੋਲ ਤਾਂ ਏ ਸਭ ਹਾਜ਼ਿਰ ਵੇ
ਕੁੱਝ ਹੈ ਜੋ ਅੰਦਰੋਂ ਖੋਇਆ ਏ

ਨਿੱਤ ਲੰਘਦੈਂ ਖਿਆਲਾਂ ਦੀ ਬੀਹੀ
ਕਦੇ ਇਲਮ ਕਦੇ ਇਖ਼ਲਾਸ ਬਣਕੇ
ਮੈਂ ਵਾਂਗ ਹੋਈ ਉਸ ਤਾਰੇ ਦੇ
ਜੋ ਚੰਨ ਨਾਲ ਖੜ੍ਹਾ ਅੱਧ' ਮੋਇਆ ਏ!

ਕੁੱਝ ਗੱਲਾਂ

ਦੂਜੀ ਆਣ ਖਲੋ ਜਾਂਦੀ ਏ
ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਪਹਿਲੀ ਹੱਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ

ਦੁਸ਼ਮਣ ਬਾਜ਼ੀ ਮਾਰ ਲਈ ਏ
ਮੈਥੋਂ ਬਾਜ਼ੀ ਚੱਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ

ਰੌਣਕ ਵਿਹੜੇ ਸੱਦਾ ਦੇਣਾ
ਸ਼ਾਹੀ ਚਿੱਠੀ ਘੱਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ

ਹਾਸੀ ਮੇਰੀ ਕਦੇ ਕਦਾਈਂ
ਵਿੱਚ ਮਹਿਫ਼ਿਲਾਂ ਰਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ

ਪਰਛਾਈ ਪਾਸਾ ਵੱਟ ਲੈਂਦੀ ਏ
ਆਖ਼ਿਰ ਸਾਡੇ ਵੱਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ

ਰੂਹ ਨੇ ਜਿਹੜੀ ਸਾਂਭੀ ਚਮੜੀ
ਇਹ ਨਾ ਸਮਝੀ ਖੱਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ

ਮਿੱਥ ਕੇ ਕੇਰਾਂ ਟਾਲ ਦਈਏ ਜੇ
ਓਹਦੀ ਕਦੇ ਅੱਜ ਕੱਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ

ਸੂਝ ਸਮਝ ਇਕਬਾਲ ਹੁੰਦੀ ਏ
ਗਲ਼ ਵਿੱਚ ਪਾਇਆ ਟੱਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ

ਝਲਕ ਜਿਹਦੀ ਤੇ ਰੂਹ ਕੰਬਦੀ ਸੀ
ਦਿਲ ਵਿੱਚ ਹੁਣ ਹਲਚਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ

ਹਾਲ ਚਾਲ ਹੀ ਪੁੱਛਦੇ ਆ ਬਸ
ਅੱਗੇ ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ

ਅੱਖ ਆਬ ਨਾਲ ਡੱਕੀ ਪਈ ਏ
ਕਿਸੇ ਦੇ ਮੂਹਰੇ ਛੱਲ੍ਹ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ

ਹੱਦਾਂ ਬੰਨੇ ਟੱਪੀ ਵਿਪਤਾ
ਸੱਚੀਂ ਮੈਥੋਂ ਝੱਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ

ਦੂਜੀ ਆਣ ਖਲੋ ਜਾਂਦੀ ਏ
ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਪਹਿਲੀ ਹੱਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ!

ਅਸਾਂ ਹਰ ਦਮ

ਅਸਾਂ ਹਰ ਦਮ ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਤੁਰੇ
ਕਰੀ ਖ਼ਿਦਮਤ ਕੱਢ ਕੱਢ ਹਾੜ੍ਹੇ ਵੇ;
ਮੈਨੂੰ ਸਮਝ ਰਤਾ ਵੀ ਆਵੇ ਨਾ
ਤੈਨੂੰ ਕਿਸ ਗੱਲ ਦੇ ਨੇ ਸਾੜੇ ਵੇ!

ਯਾਦਾਂ ਲਾਟ ਅੱਗ ਦੀ ਬਣ ਧੁਖੀਆਂ
ਬਿਨ ਪੜ੍ਹਿਆ ਖ਼ਤ ਸਭ ਪਾੜੇ ਵੇ;
ਕਿਉਂ ਤੱਕਦਿਆਂ ਹੀ ਮੁੱਖ ਮੋੜ ਲਿਆ
ਅਸਾਂ ਐਨੇ ਹੋ ਗਏ ਮਾੜੇ ਵੇ!

ਗੱਲ ਕਰੇਂ ਤੂੰ ਹੱਥ ਲਕੀਰੀ ਦੀ
ਕੀ ਸੋਚ ਤੈਂ ਪੱਲੜੇ ਝਾੜੇ ਵੇ;
ਬੜੇ ਇਸ਼ਕ ਦੇ ਲੰਬੜੇ ਰਾਹ ਸੱਜਣਾ
ਨਾਂ ਕੱਲਿਆਂ ਜਾਣ ਸਹਾੜੇ ਵੇ!

ਦਿਨ ਚੰਦਰੇ, ਖਸਤੇ ਹਾਲ ਮੇਰੇ
ਨਮ ਅੱਖੀਆਂ ਅੱਥਰੂ ਤਾੜੇ ਵੇ;
ਜਿੰਦ ਮੁਕ ਗਈ ਹੁਣ ਤੇ ਸਾਰ ਲਵੀਂ
ਸੁੱਖ , ਸੱਧਰਾਂ ਲੱਗਣ ਉਜਾੜੇ ਵੇ!

ਕੀ ਲਿਖਾਂ

ਲਿਖਾਂ ਵੀ ਤੇ ਕੀ ਗਮ ਲਿਖਾਂ,
ਮੈਂ ਖੁਦ ਨੂੰ ਮਿਟਾ ਕੇ ਹਮ ਲਿਖਾਂ
ਇਨ੍ਹਾਂ ਬੁੱਲਾਂ ਦੀ ਮੁਸਕਾਈ ਨੂੰ
ਜਾਂ ਦਰਦੇ ਅੱਖੀਆਂ ਨਮ ਲਿਖਾਂ
ਤਦ ਨਾਮ ਤੇਰੇ ਦੇ ਅੱਖਰ ਬਣ
ਤਰਤੀਬ ਖਿਆਲੀਂ ਲੰਘਦੇ ਨੇ
ਕਰ ਸਿਜਦਾ ਖੁਦਾ ਆਮੀਨ ਰਹਿਬਰਾ
ਸਹਰ-ਸ਼ਾਮ ਹਰ-ਦਮ ਲਿਖਾਂ!

ਬੈਠੇ ਆ

ਇੱਕ ਦੀ ਤਾਂ ਚੱਲ ਮੰਨਿਆ ਕਰਨੀ ਬਣਦੀ ਸੀ
ਜਨਮਾਂ ਤੱਕ ਦੀ ਬਾਤ ਮੁਕਾਈ ਬੈਠੇ ਆ

ਜੇ ਤੂੰ ਖੁਸ਼ ਏ ਸਾਡੇ ਬਾਝੋਂ ਕਹਿ ਤੁਰ ਜਾ
ਅਸੀਂ ਕਿਉਂ ਆਪਣੇ ਸਾਹ ਸੁਕਾਈ ਬੈਠੇ ਆ

ਤੇਰੀ ਹੀ ਇਕ ਯਾਦ ਰਹਿ ਗਈ ਆਖ਼ਿਰ ਨੂੰ
ਪੱਲੇ ਕੱਖ ਨਾ ਸਭ ਪਾਸੋਂ ਹੁੰਝੇ ਬੈਠੇ ਆ

ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕਿਹੜੇ ਰਾਹ ਦੀ ਠੋਕਰ ਖਾ ਆਏ
ਤੁਰਨੋਂ ਫਿਰਨੋਂ ਰਹਿ ਗਏ ਭੁੰਜੇ ਬੈਠੇ ਆ

ਗਮ ਹੈ ਜਿਸਦਾ ਗੱਲ ਤਾਂ ਐਨੀ ਵੱਡੀ ਨਹੀਂ
ਖ਼ਾਹਮ-ਖ਼ਾਹ ਫੱਟ ਸੀਨੇ ਲਾਈ ਬੈਠੇ ਆ

ਘਰ ਦਾ ਹਰ ਇੱਕ ਕੋਨਾ ਤੰਗ ਏ ਮੇਰੇ ਤੋਂ
ਕਿੱਥੇ ਜਾਈਏ ਸਭ ਥਾਂ ਭੁਲਾਈ ਬੈਠੇ ਆ !

ਭੁਲੇਖਾ

ਅੱਜ ਫੇਰ ਭੁਲੇਖਾ ਖਾ ਗਈ ਮੈਂ
ਤੇਰੀ ਸੂਰਤ ਤੱਕ ਕੇ ਲੋਕਾ 'ਚ

ਪੱਕੇ ਜਿੰਦਰੇ ਤੋੜ ਤੂ ਆਣ ਵੜਿਆ
ਮੇਰੇ ਦਿਲ ਦੇ ਅੰਤ ਝਰੋਖਾ 'ਚ

ਵੇ ਮੈਂ ਪੀੜ ਹੰਢਾਉਂਦੀ ਗੁਜ਼ਰ ਰਹੀ
ਹੰਝੂ ਦਿਖਣ ਨਾ ਲੁਕੇ ਹੋਏ ਹੋਕਾ 'ਚ

ਤੈਨੂ ਚੱਜ ਇਸ਼ਕੇ ਦਾ ਆਇਆ ਨਾਂ
ਮੇਰੀ ਜਿੰਦ ਮੁੱਕੀ ਇਹੋ ਸੋਚਾਂ 'ਚ!

ਅਧੂਰਾ ਕਿੱਸਾ

ਹੰਝੂਆਂ ਤੋਂ ਛੱਲ ਨਾਂ ਹੋਏ
ਅੱਖੀਆਂ ਦੇ ਪਾਣੀ ਵੇ
ਉਮਰਾਂ ਤੱਕ ਸਾਥ ਦੇਣਗੇ
ਪਲਕਾਂ ਦੇ ਹਾਣੀ ਵੇ
ਇੱਕ ਨਾਂ ਮੇਰੀ ਸੁਣੀ ਹਵਾਵਾਂ
ਛੂਹ ਕੇ ਉੱਡ ਪਾਰ ਗਈ
ਤੇਰੇ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚ ਰਹੀ ਨਾਂ
ਕਹਿ ਕੇ ਹਰ ਵਾਰ ਗਈ
ਤੂੰ ਤਾਂ ਜੱਗ ਹਾਜਰ ਵਸਦੈ, ਸੱਜਣਾਂ ਅਸੀਂ ਕੱਲੇ ਆਂ!
ਤੇਰੇ ਵੱਲ ਆਉਂਦੇ ਆਉਂਦੇ, ਵਾਪਿਸ ਮੁੜ ਚੱਲੇ ਆਂ!

ਕਣੀਆਂ ਨੇ ਬਾਗੀ ਹੋਈਆਂ
ਹਿੱਕ ਮੇਰੀ ਸਾੜ ਦੀਆਂ
ਸਹੀਆਂ ਨਾਂ ਜਾਵਣ ਧੁੱਪਾਂ
ਤਿੱਖੀਆਂ ਵੇ ਹਾੜ ਦੀਆਂ

ਕਿੱਧਰੋਂ ਤੂੰ ਆਵੇਂ ਵਾਂਗਰ

ਬਣਕੇ ਪਰਛਾਵਾਂ ਵੇ

ਤੇਰੇ ਬਿਨ ਸੁੰਨੇ ਵਿਹੜੇ

ਸੁੰਨੀਆਂ ਨੇ ਰਾਹਵਾਂ ਵੇ

ਵੰਝਲੀ ਮੇਰੇ ਆਸੇ ਪਾਸੇ, ਗੂੰਜੇ ਤੇਰੇ ਬੋਲਾਂ ਦੀ!

ਯਾਦ ਵੇ ਟਲਦੀ ਨਈਓ, ਚੰਦਰੇ ਮਖੌਲਾਂ ਦੀ!

ਬਾਝੋ ਤੇਰੇ ਸੂਰਤ ਮੇਰੀ

ਮੈਨੂੰ ਕਿਉਂ ਜਚਦੀ ਨਈ

ਤਲੀਆਂ ਤੋਂ ਰੁੱਸ ਗਏ ਰੰਗ ਨੇ

ਮਹਿੰਦੀ ਵੀ ਰਚਦੀ ਨਈ

ਰੁੱਸੀਆਂ ਨੇ ਸੁਰਮ ਸਿਲਾਈਆਂ

ਗੁੰਮ ਹੋ ਗਏ ਛੱਲੇ ਆ

ਦਿਲ ਨੂੰ ਇੱਕ ਦਿਲ ਦੇ ਦਿੱਤੇ

ਡੂੰਘੇ ਫੱਟ ਅੱਲੇ ਆ

ਰਸਮਾਂ ਤੋਂ ਵਾਂਝੇ ਰਹਿ ਗਏ, ਕਿੱਸੇ ਵੇ ਪਿਆਰਾ ਦੇ!

ਉੱਡਣੇ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਖੰਭ, ਕੱਟੇ ਗਏ ਡਾਰਾਂ ਦੇ!

ਵੰਗਾਂ ਨਾਲ ਬੰਨ੍ਹਿਆ ਧਾਗਾ

ਆਖਿਰ ਤੱਕ ਰਹਿਣਾ ਏ

ਇਲਜ਼ਾਮ ਹਕੀਕੀ ਇਸ਼ਕਾ

ਸਹਿਣਾ ਤਾਂ ਪੈਣਾ ਏ

ਪੱਲੇ ਨਾਲ ਬੰਨ੍ਹ ਕੇ ਹੌਂਕੇ

ਦੋਜਖ ਵੱਲ ਪੈ ਗਏ ਆਂ

ਸਾਹਾਂ ਦੀ ਲੋੜ ਰਹੀ ਨਾਂ

ਲਾਸ਼ ਬਣ ਵਹਿ ਗਏ ਆਂ

ਹਿਜਰਾਂ ਸੰਗ ਹੱਸਦੇ ਰਹੀਏ, ਆਸ਼ਿਕ ਅਵੱਲੇ ਆਂ!

ਤੈਨੂੰ ਸਾਡੀ ਗੱਲ ਨਾਂ ਫਬਦੀ, ਕਿਉਂ ਜੋ ਅਸੀਂ ਝੱਲੇ ਆਂ!

ਸੁੱਖ ਅਮੀਨ

ਅਗਰ ਆਪਨੂੰ ਇਹ ਕਿਤਾਬ ਦੀਆਂ ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਪਸੰਦ ਆਈਆਂ ਹੋਣ ਤਾਂ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਮੇਰੇ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਈ-ਮੇਲ ਅਤੇ ਇਨਸਟਾਗ੍ਰਾਮ ਉੱਪਰ ਜਰੂਰ ਸਾਂਝਾ ਕਰੋ ਜੀ। ਮੇਰੀਆਂ ਆਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਤੇ ਨਵੀਂ ਨਿਰੋਈ ਸ਼ਾਇਰੀ ਜਾਂ ਲਿਖਤਾਂ ਪੜ੍ਹਨ ਲਈ ਮੇਰਾ ਇਨਸਟਾ ਅਕਾਊਟ ਜਰੂਰ ਫਾਲੋਓ ਕਰ ਲਵੋ। ਸ਼ੁਕਰੀਆ।

@sukh_ameen

ameensukh4@gmail.com

www.PunjabiLibrary.com

ਪੰਜਾਬੀ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ

PUNJABI LIBRARY

www.PunjabiLibrary.com